सम्पादकीय

दीर्घायु बाल मधुमेही

26 जुलाई को ब्रूस बियेल को संसार से विदा हुये तीन वर्ष हो जायेंगे। 67 वर्ष की परिपक्व आयु में एक शांत दर्द रहित मौत। हर व्यक्ति का यही सपना होता है कि उसे अंतिम समय में अस्पताल में लंबे समय ड्रिप तथा मशीनों के सहारे मृत्यु से लड़ते हुये नहीं जाना पड़े। मौत आये तो बस चीते की तरह आये दबोचे और ले जाये। ऐसा ही हुआ ब्रूस के साथ। ब्रूस 13 वर्ष की उम्र में मधुमेही घोषित हुये। उनके मधुमेही घोषित होने पर उनके माता–पिता न तो निराश या विचलित हुये, न उन्हें (ब्रूस को) होने दिया ।

*उन्होंने लगभग 55 वर्ष एक **IDDM** (बाल मधुमेही) का जीवन इन्सुलिन के सहारे जिया और खूब जिया। पूरी जीवट के साथ जिया। हर 5 साल में इलाज के आयाम बदलते देखे। उन्हें समझा, अपने चिकित्सक से पूर्णत: संतुष्ट होने पर उन्हें अपनाया। इलाज के हर पहलू को एक निष्ट भाव से करते गये। मधुमेह की किसी जटिलता का कभी सामना नहीं हुआ । शादी की, बच्चे हुये उनकी शादी की, नाती–पोते हुये। भरे–पूरे परिवार में और किसी को भी मधुमेह नहीं है। पारिवारिक व्यापार चलाया, उसे आगे बढ़ाया और नये आयाम दिये।*

बाल मधुमेही ट्रस्ट (IDDT) की स्थापना नार्थेम्पटन में की । यह ट्रस्ट अपने काम आज भी कर रहा है। उसका ध्येय मधुमेह के इलाज में अनावश्यक महँगी दवाओं का सेवन रुकवाना और इलाज को सबकी पहुँच में रखने में मदद करना है।

ब्रूस की एक सामान्य दर्द रहित मौत हुयी पर तीन वर्ष बीत जाने पर भी उसके प्रशंसकों के मन में उसके न होने की टीस आज भी है।

ब्रूस का जीवन उन सभी बाल मधुमेहियों के अभिभावकों के लिये एक आदर्श होना चाहिये जो अपने बच्चे की बीमारी की खबर सुनते ही अधमरे से हो जाते हैं और अपने साथ–साथ उस बालक का मनोबल भी तोड़ देते हैं।

आईये ब्रूस की तरह ही मधुमेह के डर को भगाकर उससे लड़ना सीखें।

संपादक